ग़ज़ल

ग़ज़ल अरबी लफ़्ज़ है और इस के लुग़वी मआनी औरतों से बात करना है।ग़ज़ल इब्तिदा में उर्दू क़सीदे का एक हिस्सा होती थी ।फ़ार्सी शायरी में उसे एक आज़ाद सिन्फ़ के तौर पर बरता गया ।ग़ज़ल फ़ार्सी से ही उर्दू में आई। साख़त के एतबार से ग़ज़ल का शेर क़ाफ़िया, रदीफ़ और ख़ास वज़न पर मुश्तमिल होता है जिसे बहर कहते हैं । ग़ज़ल के पहले शेर को मतला और आख़िरी शेर को मक़ता कहते हैं। मक़ता में शायर का तख़ल्लुस भी होता है।

निकलना ख़ुल्द से आदम का सुनते आए हैं लेकिन
बहुत बे-आबरू हो कर तिरे कूचे से हम निकले

उस की उम्मीद-ए-नाज़ का हम से ये मान था कि आप
उम्र गुज़ार दीजिए उम्र गुज़ार दी गई

कोई उम्मीद बर नहीं आती
कोई सूरत नज़र नहीं आती

मौत का एक दिन मुअय्यन है
नींद क्यों रात-भर नहीं आती

आगे आती थी हाल-ए-दिल पे हंसी
अब किसी बात पर नहीं आती

पता अब तक नहीं बदला हमारा
वही घर है वही क़िस्सा हमारा
वही टूटी हुई कश्ती है अपनी
वही ठहरा हुआ दरिया हमारा

हम अपनी धूप में बैठे हैं 'मुश्ताक़'
हमारे साथ है साया हमारा

rekhta

Urdu Learning Program

Basics of Urdu Poetry

Date: 4 June 2018

Words in Urdu Poetry

1. शिद्दत – 2 2
2. ज़िंदगी – 2 1 2
3. चाहत – 2 2
4. मोहब्बत – 1 2 2
5. इजाज़त – 1 2 2
6. आदमी
7. पहर – 1 2
8. मगर – 1 2
9. बंदगी
10. ख़ुदा
11. पानी
12. रुस्वाई – 2 2 2
13. हैरानी – 2 2 2
14. दिल – 2
15. तिल – 2
16. रोज़-ओ-शब – 2 1 2
17. आख़िरत – 2 1 2
18. वफ़ा – 1 2
19. नज़र – 1 2